COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 17, Issue No: 2, Year: 2026 (July-December)
PP: 87- 90
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ का कलात्मक, व्यावसायिक एवं व्यक्तित्वगत अध्ययन

Prabhjot Kaur

Research Scholar
Lovely Professional University

Ravjot Kaur

Associate Professor
Lovely Professional University

सारांश

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सितार वादन की परंपरा को समृद्ध एवं व्यापक स्वरूप प्रदान करने वाले कलाकारों में उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे एतावा अथवा इमदादखानी परंपरा के प्रमुख प्रतिनिधि माने जाते हैं। उनके संगीत में परंपरा और सृजनात्मकता का ऐसा संतुलन दिखाई देता है जिसमें राग की शास्त्रीय मर्यादा के साथ स्वराभिव्यक्ति, लयकारी तथा तकनीकी कौशल का समन्वय मिलता है। उनके व्यक्तित्व में दीर्घकालीन साधना, गुरु-परंपरा के प्रति सम्मान, मंचीय अनुशासन और व्यक्तिगत कलात्मक दृष्टि का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

प्रस्तुत अध्ययन में उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ के व्यक्तित्व, सांगीतिक पृष्ठभूमि, व्यावसायिक जीवन, कलात्मक योगदान तथा सितार वादन की प्रमुख शैलीगत विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य उनके संगीत को केवल जीवनीपरक दृष्टि से देखना नहीं, बल्कि उनके कलात्मक व्यक्तित्व और आधुनिक सितार वादन में उनके योगदान को समझना है।

1. प्रस्तावना

भारतीय संगीत परंपरा में कलाकार का मूल्यांकन केवल उसके वादन-कौशल के आधार पर नहीं किया जाता, बल्कि उसके व्यक्तित्व, साधना, संगीत-दृष्टि, मंचीय व्यवहार, कलात्मक चिंतन तथा संगीत के प्रचार-प्रसार में उसके योगदान को भी समान महत्व दिया जाता है। सितार वादन के क्षेत्र में उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने परंपरागत संगीत-संस्कारों को आत्मसात करते हुए अपनी विशिष्ट कलात्मक पहचान निर्मित की।

एतावा/इमदादखानी घराने की परंपरा में स्वराभिव्यक्ति, मींड और गायकी अंग को विशेष महत्व प्राप्त है। शाहिद परवेज़ ख़ाँ ने इसी सांगीतिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए अपने वादन में गायकी अंग और तंत्रकारी अंग दोनों का संतुलित प्रयोग किया। उनकी कलात्मक पहचान उनकी स्वर-संवेदनशीलता, मींड, लयकारी, तानों की स्पष्टता तथा राग की भावात्मक अभिव्यक्ति से निर्मित हुई है।

2. व्यक्तित्व एवं सांगीतिक पृष्ठभूमि

उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ का जन्म 1954 में मुंबई में हुआ। वे एक प्रतिष्ठित संगीत-परंपरा से संबंधित परिवार में जन्मे, जिसमें अनेक पीढ़ियों से सितार एवं सुरबहार वादन की परंपरा रही है। उनके पिता एवं गुरु उस्ताद अज़ीज़ ख़ाँ से प्राप्त प्रशिक्षण ने उनके संगीत-संस्कार को आधार प्रदान किया। संगीत नाटक अकादमी के अभिलेख में उनके प्रारंभिक प्रशिक्षण और संगीत-जीवन का उल्लेख मिलता है।

पारिवारिक संगीत वातावरण ने उन्हें छोटी आयु से ही नियमित रियाज़, अनुशासन और परंपरागत संगीत-मूल्यों से परिचित कराया। उनके व्यक्तित्व में परंपरा के प्रति सम्मान के साथ नवीन परिस्थितियों

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

के अनुरूप संगीत प्रस्तुत करने की क्षमता भी दिखाई देती है। यही संतुलन उन्हें आधुनिक मंचीय परिवेश में विशिष्ट शास्त्रीय कलाकार के रूप में स्थापित करता है।

3. कलात्मक व्यक्तित्व

उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ के कलात्मक व्यक्तित्व का प्रमुख पक्ष उनकी स्वतंत्र वादन पहचान है। उन्होंने जिस परंपरा से संगीत प्राप्त किया, उसके मूल तत्वों को सुरक्षित रखते हुए उन्हें व्यक्तिगत अभिव्यक्ति प्रदान की। उनके संगीत में स्वर की शुद्धता के साथ स्वर की भावात्मकता पर भी विशेष ध्यान दिखाई देता है।

उनकी कलात्मक दृष्टि में राग को केवल निर्धारित स्वरों के समूह के रूप में न देखकर उसके भाव और वातावरण को विकसित करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। प्रस्तुति के प्रारंभिक चरणों में स्वर और भाव को प्रमुखता देते हुए वे धीरे-धीरे लय तथा तकनीकी पक्ष को विस्तार देते हैं। इससे उनकी प्रस्तुति में स्वाभाविक विकास और कलात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है।

4. गायकी अंग एवं कलात्मक अभिव्यक्ति

शाहिद परवेज़ ख़ाँ की कलात्मक पहचान में गायकी अंग का विशेष महत्व है। सितार पर गायन की भावात्मकता को प्रस्तुत करने के लिए स्वर के भाव, उच्चारण, विराम और स्वर-संबंधों की गहरी समझ आवश्यक होती है। उनके वादन में मींड और स्वर-संचालन के माध्यम से कंठ-संगीत जैसी अभिव्यक्ति का प्रभाव उत्पन्न होता है।

गायकी अंग उनके लिए केवल तकनीकी शैली नहीं, बल्कि राग की भावाभिव्यक्ति का माध्यम बन जाता है। इस कारण उनके वादन में मधुरता, प्रवाह और भावात्मक गहराई अनुभव की जाती है।

5. तंत्रकारी पक्ष एवं तकनीकी दक्षता

गायकी अंग के साथ उनका तंत्रकारी पक्ष भी अत्यंत सशक्त है। सितार की संरचना और उसकी तारों की क्षमता का प्रभावी उपयोग करते हुए उन्होंने तीव्र तानों, तोड़ों, झाला तथा विविध लयात्मक संरचनाओं में अपनी तकनीकी दक्षता प्रदर्शित की।

उनकी तकनीकी क्षमता का विशेष महत्व इस बात में है कि तीव्र गति के अंशों में भी राग की पहचान और संगीतात्मकता बनी रहती है। इससे स्पष्ट होता है कि उनके लिए तकनीक स्वयं उद्देश्य नहीं, बल्कि संगीतात्मक विचार को प्रभावी बनाने का माध्यम है।

6. लय एवं लयकारी के प्रति दृष्टिकोण

उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ की कला में लय का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी प्रस्तुति में लय के साथ संवाद क्रमशः विकसित होता है। विलंबित गति में रागात्मक विस्तार के पश्चात मध्य और द्रुत गति की ओर बढ़ते हुए उनकी लयकारी अधिक जटिल एवं प्रभावशाली होती जाती है।

लय के प्रति उनकी सजगता उनकी तकनीकी क्षमता को और अधिक प्रभावशाली बनाती है। उनके वादन में गति की तीव्रता के बावजूद ताल की संरचना और सम की ओर लौटने की स्पष्टता बनी रहती है।

7. व्यावसायिक व्यक्तित्व

उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ का व्यावसायिक व्यक्तित्व उनकी व्यापक मंचीय उपस्थिति और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रतिनिधित्व से निर्मित हुआ। उन्होंने भारत के अनेक प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में प्रस्तुति दी तथा विदेशों में भी भारतीय संगीत का प्रतिनिधित्व किया।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

उनकी व्यावसायिक सफलता का एक महत्वपूर्ण कारण उनकी प्रस्तुति में परंपरा और मंचीय प्रभाव के बीच संतुलन है। वे शास्त्रीय संगीत की मूल संरचना को बनाए रखते हुए ऐसी प्रस्तुति देते हैं जो श्रोता को संगीत की ओर आकर्षित करती है।

8. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योगदान

उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर व्यापक श्रोता-वर्ग तक पहुँचाने में योगदान दिया। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उनकी प्रस्तुतियों ने भारतीय सितार वादन की विशिष्ट परंपरा को वैश्विक संगीत-परिदृश्य में स्थापित करने में सहायता की।

विदेशी मंचों पर भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत करना केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व का भी कार्य है। इस दृष्टि से उनका व्यावसायिक जीवन भारतीय संगीत की व्यापक सांस्कृतिक उपस्थिति के संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

9. कलाकार एवं शिक्षक के रूप में व्यक्तित्व

किसी भी शास्त्रीय संगीत परंपरा का संरक्षण केवल मंचीय प्रदर्शन से संभव नहीं होता; उसके लिए ज्ञान का अगली पीढ़ी तक हस्तांतरण भी आवश्यक है। उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ के व्यक्तित्व में कलाकार के साथ-साथ संगीत-परंपरा के संवाहक का पक्ष भी महत्वपूर्ण है।

उनके संगीत-संस्कार में गुरु-शिष्य परंपरा का महत्वपूर्ण स्थान रहा। आगे चलकर संगीत-ज्ञान के प्रसार और प्रशिक्षण के माध्यम से उन्होंने इस परंपरा को आगे बढ़ाने में योगदान दिया।

10. सम्मान एवं प्रतिष्ठा

उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ को भारतीय संगीत के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2006 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा वर्ष 2012 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। ये सम्मान उनके दीर्घकालीन कलात्मक योगदान और भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनकी प्रतिष्ठित स्थिति को प्रमाणित करते हैं।

11. कलात्मक एवं व्यावसायिक व्यक्तित्व का समन्वय

उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उनका कलात्मक और व्यावसायिक जीवन एक-दूसरे से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। उनकी व्यावसायिक सफलता उनकी कलात्मक पहचान पर आधारित रही और उनकी कलात्मक प्रतिष्ठा को व्यापक मंचीय अनुभव से विस्तार मिला।

उन्होंने परंपरा की मूल भावना को बनाए रखते हुए अपने वादन को व्यक्तिगत पहचान प्रदान की। इसी कारण उनकी कला में एक ओर घराने की सांगीतिक विरासत दिखाई देती है और दूसरी ओर व्यक्तिगत सृजनशीलता।

12. निष्कर्ष

उस्ताद शाहिद परवेज़ ख़ाँ का व्यक्तित्व भारतीय शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परंपरा, निरंतर साधना और व्यक्तिगत कलात्मक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। उनके व्यक्तित्वगत पक्ष में अनुशासन और संगीत के प्रति समर्पण, कलात्मक पक्ष में गायकी अंग एवं तंत्रकारी अंग का संतुलन तथा व्यावसायिक पक्ष में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावशाली उपस्थिति प्रमुख रूप से दिखाई देती है।

उन्होंने परंपरा को स्थिर रूप में स्वीकार करने के बजाय उसे अपनी सृजनात्मक दृष्टि से विकसित किया। उनके वादन में रागात्मक सौंदर्य, स्वर-संवेदनशीलता, मींड, लयकारी और तकनीकी दक्षता का संतुलित रूप दिखाई देता है। अतः उनका अध्ययन केवल एक कलाकार के जीवन-वृत्त तक सीमित

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

नहीं, बल्कि भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना-परंपरा, कलात्मक सृजनशीलता और आधुनिक मंचीय संस्कृति के संबंधों को समझने का माध्यम भी है।

संदर्भ-सूची

1. संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली. "Shahid Parvez Khan – Hindustani Instrumental Music (Sitar), Sangeet Natak Akademi Award 2006." आधिकारिक अभिलेख.
2. Shahid Parvez Khan. "Biography." Official Website.
3. Shahid Parvez Khan. "About." Official Website.
4. Shahid Parvez Khan. "Musical Lineage – Etawah Gharana." Official Website.
5. Aga Khan Museum. "Ustad Shahid Parvez Khan." Aga Khan Museum, Toronto.
6. Indian Express. "Song of the Sitar." 3 March 2013.
7. Bengal Foundation. "Ustad Shahid Parvez Khan – Live at Bengal Classical Music Festival 2014."
8. Clayton, Martin. Time in Indian Music: Rhythm, Metre, and Form in North Indian Rag Performance. Oxford University Press, 2000.
9. Miner, Allyn. Sitar and Sarod in the 18th and 19th Centuries. Motilal Banarsidass, 1993.
10. Shankar, Ravi. My Music, My Life. Mandala Publishing, 2007.
11. Banerjee, S. R. Sitar and Its Technique. Delhi: B. R. Publishing Corporation.
12. Khan, Shahid Parvez. विभिन्न सार्वजनिक साक्षात्कार, संगीत-प्रस्तुतियाँ एवं उपलब्ध अभिलेखीय सामग्री।
13. All India Radio. National Programme of Music: Archival Broadcasts and Artist Records, उपलब्ध अभिलेखीय सामग्री.
14. Sangeet Natak Akademi. National Awards and Fellowship Records: Instrumental Music (Sitar), New Delhi.

© Copyright @ Authors